पाठ 4. सभ्य बनने की सनक

पाठ का उद्‌देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्‌देश्य बच्चों को सभ्य बनने का वास्तविक अर्थ समझाना है। मनुष्य के आंतरिक गुण तथा संस्कार ही उसे समाज में सभ्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति का सम्मान दिलाते हैं।

पाठ का सारांश

इंग्लैंड प्रवास के दौरान महात्मा गांधी पश्चिमी सभ्यता से काफ़ी प्रभावित हुए। उन्होंने भी खुद को उसी रंग-रूप में ढालने का प्रयास किया। महात्मा गांधी द्‌वारा मांसाहार न करने पर उनके मित्र को लगा कि कहीं वे कमज़ोर न हो जाएँ। महात्मा गांधी ने सभ्य दिखने के लिए कपड़ों पर, नृत्य, संगीत तथा भाषण-कला सीखने के लिए काफ़ी धन खर्च किया। एक दिन डेविड चार्ल्स बेल की पुस्तक पढ़ने पर गांधी जी को आत्मज्ञान हुआ तथा सभ्य दिखने के सारे तौर-तरीके छोड़ दिए। उन्हें समझ आया कि वे एक विद्‌यार्थी हैं और उनके लिए विद्‌या-धन जोड़ना ज़्यादा ज़रूरी है। गांधी जी सभ्य बनने के उस मोह-काल में भी अपने खर्चों का हिसाब-किताब रखना न भूलते थे।

अध्यापन संकेत

संस्मरण को पढ़ाने से पूर्व गांधी जी के व्यक्तित्व के बारे में बच्चों से बातचीत करें। स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान की चर्चा की जा सकती है। असहयोग आंदोलन और दांडी मार्च आदि का उल्लेख करें। बच्चों से पाठ का वाचन करवाएँ तथा कठिन शब्दों का अर्थ बताएँ।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें –

- 'सादा जीवन उच्च विचार', 'शाकाहार बनाम मांसाहार' जैसे विषयों पर बच्चों की राय जानें। उन्हें अपने भाव अभिव्यक्त करने का पूरा अवसर दें।
- कुछ पुस्तकों के नाम पाठ में आए हैं उनसे संबंधित जानकारी बच्चों के साथ बाँटें।
- बच्चों के अंदर विद्‌यार्थी के कर्तव्य एवं संस्कारों का बोध जैसे भाव जगाने का प्रयत्न करें।
- सभ्य बनने के लिए मनुष्य के अंदर कौन-से गुण होने आवश्यक हैं?

डिजीडिस्क (DigiDisc) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्‌यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।